अक्षर

69

100/-

अक्षर

विचारशीलता और बौद्धिक हस्तक्षेप का उपक्रम

सम्पादक
प्रियंवद

उप सम्पादक
जीवेश प्रभाकर

वर्ष : 25 - अंक : 69
फरवरी -2025

यह अंक
https://notnul.com
पर उपलब्ध है ।

अकार की सदस्यता संबंधी जानकारी–

एक प्रति	- 100 /- रु.
वार्षिक सदस्यता (तीन अंक)	- 500/- रु.
संस्थागत वार्षिक सदस्यता (तीन अंक)	- 800/- रु.
तीन वर्ष की सदस्यता (व्यक्तिगत)	- 1200/- रु.
तीन वर्ष की सदस्यता (संस्थागत)	- 1800/- रु.
आजीवन सदस्यता (व्यक्तिगत)	- 3500/- रु.
संस्थागत आजीवन सदस्यता	- 5000/- रु.

(पत्रिका के समस्त सदस्यता शुल्क मे रजिस्टर्ड पार्सल का डाक खर्च सम्मिलित है।)

आप 'अकार' के लिये धन राशि अपने क्षेत्र के 'बैंक ऑफ बड़ौदा' की किसी भी ब्रांच में जमा करा सकते हैं। 'अकार' के खाते के ब्यौरे नीचे दिए जा रहे हैं। आपको 'अकार' के खाते में राशि जमा कराने के लिये शुरू के चार ब्यौरों की जरूरत पड़ेगी। नेट द्वारा जमा कराने पर शेष दो ब्यौरे भी काम आएंगे।

Name of the Firm which Holds the bank Account :- AKAR PRAKASHAN
Bank Name :- Bank of Baroda, Bank Adress :- Panki, Site - 1, Kanpur - 208002.,
Bank Account No.- 09620200000089 MICR Code :- 208012012
IFSC Code :- BARB0PANKIX (0 is ZERO, NOT ALPHABETICAL O)

प्रकाशक: अकार प्रकाशन, B -204, रतन सैफ़ायर,16/70,सिविल लाइन्स कानपुर - 208001
ई मेल - akarprakashan@gmail.com

सम्पर्क :
प्रियंवद
B -204, रतन सैफ़ायर,,16/70, सिविल लाइन्स कानपुर - 208001
ई मेल - priyamvadd@gmail.com (मो.) 9839215236

जीवेश प्रभाकर :
69/2113, रोहिणीपुरम -2, रायपुर-492001 (छ.ग.)
ई मेल - jeeveshprabhakar@gmail.com मो. - 09425506574
आवरण :- जीवेश प्रभाकर
मुद्रक
सांखला प्रिंटर्स, विनायक शिखर, बीकानेर - 334003, फोनः - 0151-2242023
कम्पोज़िंग
विकल्प विमर्श, 87 निगम कॉलोनी, रायपुर - 492 001
सम्पादन व संचालन अवैतनिक । समस्त विवाद कानपुर न्याय क्षेत्र के अन्तर्गत होंगे । पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के विचार सम्बन्धित लेखक के अपने हैं । सम्पादक अथवा प्रकाशक का उससे सहमत होना अनिवार्य नहीं है ।

अनुक्रम

1. **अकथ :** चमगादड़ों के बहाने से - *प्रियंवद* 06

2. **लेख** : शरच्चंद्र मुक्तिबोध - *राजेन्द्र मुंढे* 13

यादों में पिता : प्रदीप मुक्तिबोध

3. **लेख :** सपन एक देखली - *लाल्टू* 40

4. **लेख** : छत्तीसगढ़ी पंडवानी - *मुश्ताक़ ख़ान* 50

5. **लेख** : तीजन गाथा : एक लोक कलाकार के संघर्ष का आख्यान -*राजेंद्र सोनबोइर* ..58

6. **लेख** : कथा-साहित्य, समांतर और समानांतर सिनेमा के अन्वेषी फिल्मकार!
- *जितेन्द्र भाटिया* 71

7. **प्रसंग :अप्रसंग** : जितेंद्र भाटिया का संस्मरण : कुछ जिद्दी सवाल -*विजय कुमार*.. 95

8. **लेख :** विप्लव-युद्ध में अर्द्धांगिनियां
आंचल को परचम बनाने वाली क्रांतिकारी विरासत - *सुधीर विद्यार्थी* 100

9. **कहानी :** एक दुर्घटना के इर्द-गिर्द - *सन्तोष दीक्षित* 116

10. **रपट :** हमारी प्रगतिशील चेतना के100 साल - *अनूप शुक्ल* 122
(अनुष्टुपः गिरिराज किशोर स्मृति व्याख्यानमाला- 4)

चमगादड़ों के बहाने से

मेरे नए घर की बालकनी के ठीक सामने गूलर का एक पुराना और बड़ा पेड़ है । यह घर मेरे पुश्तैनी घर के बिल्कुल पास और उसी मुहल्ले में है, जिस घर में जन्म लेकर 65 वर्ष की उमर तक मैं रहा था । बचपन के निठल्ले और आवारा दिनों में जब यूँ ही घूमता था, तब भी यह पेड़ था, इस हिसाब से जोड़ें तो पेड़ की उमर 80 साल से ज्यादा की ही थी ।

यह पेड़ एक बड़े सरकारी विभाग की ज़मीन पर है । इस विभाग की इमारत के साथ ही जुड़े, पुराने बंद पड़े बरफ़खाने की बड़ी ज़मीन, एक बिल्डर ने खरीदी । उस पर कुछ फ्लैट्स बना दिए । बरफ़खाने के अंदर भी इतने ही पुराने नीम और पीपल के पेड़ थे । फ्लैट्स बनाने के दौरान उसने ये सब काट दिए । इनके कटने के बाद उस पूरे इलाके में एक भी पेड़ नहीं दिखता था, सिवाय इस गूलर के । यह इसलिए बचा रहा क्योंकि यह सरकारी विभाग की जमीन पर था और यही इसके भविष्य में बचे रहने की गारण्टी भी थी । अब चारों ओर उठी पत्थरों की ऊँची ऊँची उन इमारतों के बीच, जो आसमान, ताज़ी हवा और चाँद, तारों की दुनिया भकोस चुकी हैं, यही एक अकेला पेड़ दिखता है ।

अक्षर 69

मेरा तीन मंज़िला पुश्तैनी मकान अस्सी साल पुराना हो गया था । धीरे-धीरे जर्जर हो रहा था। उसमें सीलन, अंधेरा रहता था । समय के साथ तीन मंज़िल संकरी सीढ़ियाँ चढ़ना उतरना कठिन होता जा रहा था । मेरे लिए उसे छोड़ना एक ज़रूरत और मजबूरी बन गया था । मैंने उसी इलाके में एक घर की तलाश शुरू की । इसी सिलसिले में जब मैंने बिल्डिंग में उस पेड़ से मिली बालकनी को देखा, तो मैंने वही फ्लैट ले लिया । इतना ही नहीं, पेड़ के ठीक सामने वाले कमरे को ही अपना कमरा भी बनाया । अब मुझे कमरे और बालकनी से पेड़ हमेशा दिखता रहता है । इस तरह वह हर वक्त मेरे साथ है, गोया मेरे जीवन का हिस्सा हो ।

गूलर के इस पेड़ पर कई परिन्दों का बसेरा था । इनमें तोते सबसे ज्यादा थे । कबूतर, बुलबुल और गौरय्या भी थीं। गिलहरी घंटों आवाज देती थी । कई